नवीन शिक्षण तकनीकि :—

शिक्षण मशीन :—

आधुनिक समाज में शैक्षिक तकनीकि में शिक्षण मशीनों का प्रयोग अधिक हो रहा है। मो० तेरिक ऐशबी ने लिखा है कि " इस शताब्दी में मुद्रण के आविष्कार के बाद पहली बार शिक्षण में नयी तकनीकियों का प्रयोग किया जा रहा है जो निश्चय ही शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया को रूपान्तरित कर देगी, यद्यपि रूपान्तरण क्या होगा यह कल्पना की बात है। ये तकनीकियाँ अभी तक परिचित हैं — चलचित्र, ग्रामोफोन रिकार्ड और टेलीविजन तथा रेडियो से इसका प्रसारण, टेप रिकार्डर, स्वचालित शिक्षण तथा महत्वपूर्ण संख्यात्मक संगणक" इस प्रकार — शिक्षण मशीनें तो आधुनिक शिक्षण की एक आवश्यकता समझी जा रही हैं।

इन शिक्षण मशीनों में —

(1) स्वचालित शिक्षण मशीनें

(2) स्वशिक्षक मशीनें

(3) दृश्य-श्रव्य सहायक और संगणक मशीनें आती हैं। आज इनका उत्पादन, प्रचलन और प्रयोग इसलिए हो रहा है कि इनसे अध्यापक और विद्यार्थी दोनों थोड़े

समाज में अधिक से अधिक और सही ढंग से ज्ञानार्जन कर सके। वर्तमान समाज में शिक्षण मशीनों ने भी मौखिक एवं लिखित ढंग से अधिगम करने में सहायता की है। इस प्रकार से शिक्षण मशीनों ने " बहुसाधन संचार प्रणाली " को आरम्भ किया है। इस प्रणाली से शिक्षा लेने वाले स्वाभाविकोत्तजना के समान ही व्यवहार - अनुक्रिया करते पाये जाते हैं। और अपनी व्यक्तिगत भिन्नता एवं रुचि के अनुसार शान्तिपूर्वक समायोजन करते हुए परिवर्तनों के अनुकूल कार्य करते हैं। उदाहरणस्वरूप - अभिक्रमित अनुदेशन (कक्षा में चर्चा की जा चुकी है)

हिन्दी शिक्षण में भी इन शिक्षण मशीनों का पर्याप्त योगदान पाया जाता है। कठिनाई केवल उनकी उपलब्धता एवं उनके प्रशिक्षण में है। भाषा में हिन्दी शिक्षण में स्वर - व्यंजन का ज्ञान, अक्षर - लिपि का बोध, उच्चारण का बोध, शब्द एवं वाक्य रचना का ज्ञान, कहानी - वार्ता - अभिनय का ज्ञान आदि शिक्षण मशीनों के माध्यम से किया जा सकता है। श्रवण एवं नेत्र इन दोनों ज्ञानेन्द्रियों से जो प्रत्यक्ष बनते हैं, वे स्थायी होते हैं। आज भाषा पर एक संकट छाया है। उस पर अन्य भाषाओं का पलड़ा भारी पड़ रहा है।

Scanned with CamScanner

आपने ही देश में ऐसे आपनाने से लोग हिचकिचा रहे हैं जिसका एक कारण "जनसमूह में संचार माध्यम" रूप में इन मशीनों को न अपनाया जाना है, जितनी जल्दी इन शिक्षण मशीनों को अपनाकर इस प्रयोग में लायेंगे उतना ही भाषा शिक्षण के क्षेत्र में प्रगति कर सकेंगे। जैसे में आवश्यक है कि भाषा शिक्षण में ध्वनि यंत्र, ग्रामोफोन के रिकार्ड, टेप रिकार्डर, पठन-पीठिका आदि का प्रयोग किया जावे।

सभी प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जो प्राचीनता और रूढ़िवादिता आदि है, जिसने शिक्षण प्रक्रिया को जकड़ उसे विकृत बना दिया है उससे में उसे नवीनता की ओर उन्मुख करने, मौलिक बनाने, गहनता प्रदान करने के साथ-साथ एकीकृत शिक्षण को साकार करने में शिक्षण तकनीक की भूमिका सराहनीय एवं अविस्मरणीय है।

Scanned with CamScanner